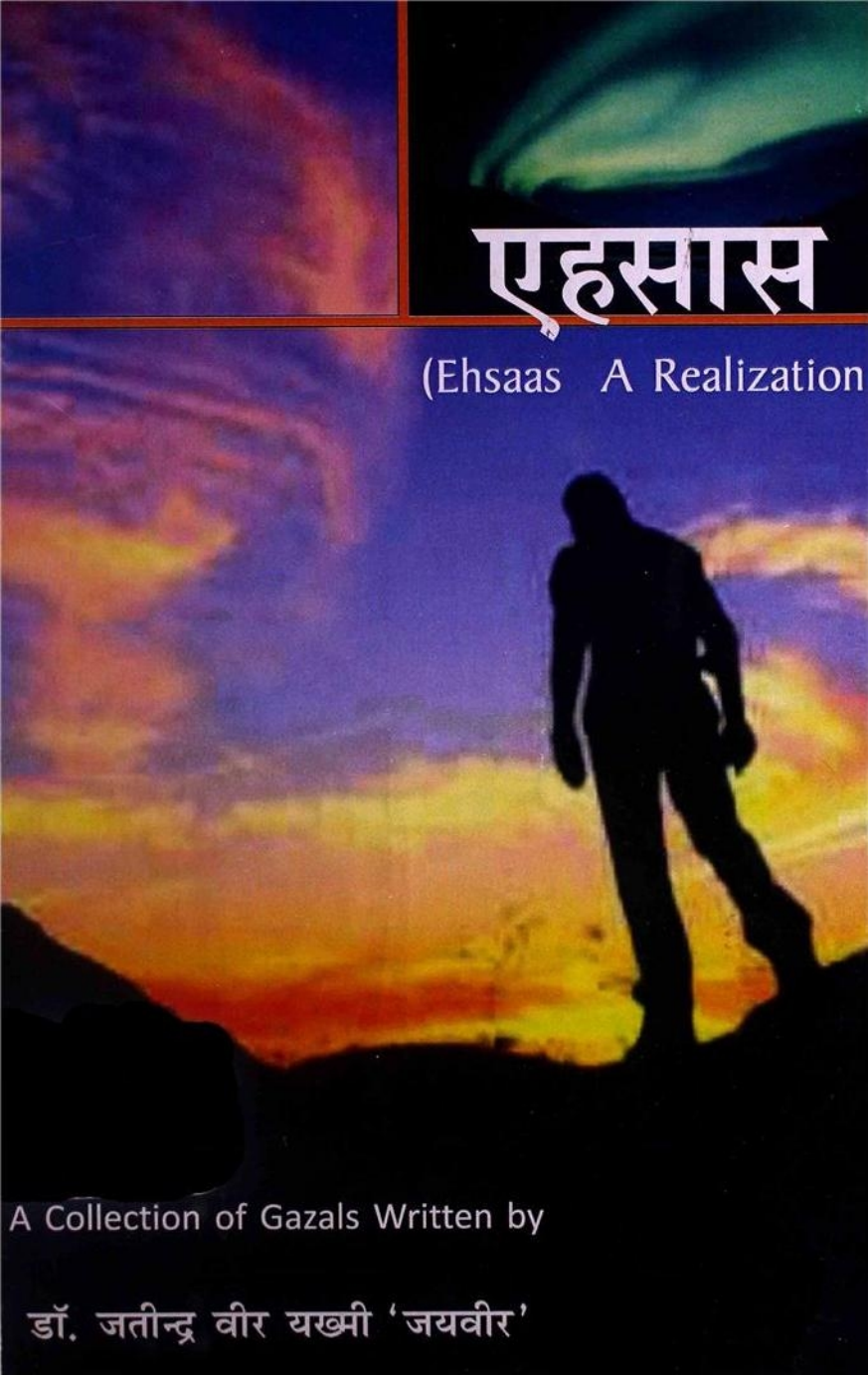
एहसास
(Ehsaas A Realization
A Collection of Gazals Written by
डॉ. जतीन्द्र वीर यख्मी 'जयवीर'

एहसास

(Ehsaas – A Realization)

A Collection of Gazals Written by

डॉ. जतीन्द्र वीर यख्मी 'जयवीर'

grew with these happenings, which equipped us with a reasonably good vocabulary of Urdu. During my graduation days at Kurukshetra University I came across a complete *Divan* of Ghalib, which was to my convenience, in Devnagari script. I would spend hours reading it and imagining the thought processes that may have crossed the mind of Ghalib when he penned those unmatched *gazals*, pure sublime.

In 1965, I came to Mumbai to take up my job as a scientist in BARC, where I served for 45 years until 2010. Over the years, I have enjoyed reading the great masters, Meer, Ghalib and Daag, and got inspired by them. Among the more recent Urdu poets my favorites have been Sahir Ludhianvi, Kaifi Azmi and Majrooh Sultanpuri. It is not common to find a scientist to write poetry, in any language. I have, of course, enjoyed doing so and have even drawn relaxation and solace from this activity. Writing *Gazals* can be a passion but I have not allowed it to ingress into my professional responsibilities. Most of these *gazals* have been penned by me while traveling by road, train or by air, or while just waiting at airport lounges, or during my morning walks. This activity has been a rather private thing with me. Only at a few selected occasions, I have ventured into reciting some of my *gazals*. Some close friends like Dr. P.K. Mathur and Sh. R.S. Chhokra have always encouraged my efforts, and I have phoned them up and recited each of these *gazals* to them, as soon as it was completed.

My sincere thanks go to Bharat Ratna Prof. C.N.R. Rao and the famous gazhal maestro Sh. Pankaj Udhas for writing their valuable comments about 'Ehsaas'. My wife Mrs. Amar Upasana, has been generous in keeping immense patience during my creative pursuits over the years, for which she deserves my gratitude. 'Ehsaas' is the second collection of my poems. The first one 'Izhaar' was published in 2004. I shall always be eager to get reactions and respose from readers of 'Ehsaas'.

J.V. Yakhmi 'Jayaveer'

1

रोज बदलें, करवटें हम, रात भर, अब क्या कहें।
मौत का या जिन्दगानी का है डर, अब क्या कहें।

वो अंधेरी लंबी राहें, हम अकेले नातवां,
जांबलब हैं, उन लम्हों को, यादकर, अब क्या कहें।

यार की फितरत में धोखा, हमकदम की साज़िशें,
इन सभी बातों से थे हम बाख़बर, अब क्या कहें।

वो जगह, हमने गुजारा खेलता बचपन जहां
एक घर हॉ, इस गली में था इधर, अब क्या कहें।

सैंकड़ों आंखें कहेंगी, एक पुरनम अलविदा,
था भटकता एक सूफी, दरबदर, अब क्या कहें।

2

रूख बदला है, आप वही हैं, होगी कोई मजबूरी।
पहले जैसे आप नहीं हैं, होगी कोई मजबूरी।

सर ऑखों पे, अहले दुनिया, हमें बिठाते थे अक्सर,
कहलाते अब ख़ाकनशीं हैं, होगी कोई मजबूरी।

वो अपनापन, वो नज़दीकी, रह पाते न मेरे बिन
अब वो तआल्लुकात नहीं हैं, होगी कोई मजबूरी।

रखें हम पर नजर बराबर, अपने हों या बेगाने,
क्यों आते ये बाज, नहीं हैं, होगी कोई मजबूरी।

फर्क लगे है, कुछ अर्से से, कहनी करनी में उनकी
दिल का शीशा साफ नहीं है, होगी कोई मजबूरी।

दुनियादारी चलो निभादी, हाल हमारा पूछें वो
लफ्ज, तो हैं, जज़बात नहीं हैं, होगी कोई मजबूरी।

3

गाज हर दिल पे गिरे तो क्या करें, किससे कहें।
मालो ज़र अपना लुटे तो क्या करें, किससे कहें।

छोड दें दुनिया, नहीं ऐसा कोई बंधन मगर
उम्र के इस दायरे को क्या करें, किससे कहें।

यूं तो है मौका नया नगमा बने दिलकश कोई
धुन वोही हर साज, पे हो क्या करें, किससे कहें।

दुख कटे, जहमत कटे, कट जाय बदहाली सभी,
वक्त काटे न कटे तो क्या करें, किससे कहें।

इस ज़मीं से आसमां तक, है बला की रौशनी
वनके आतिश दिल जले तो क्या करें, किससे कहें।

हम तवाह हैं, तो सरासर ग़ैर पे इल्जाम है
ग़ैर भी अपना लगे तो क्या करें, किससे कहें।

जोश भी था, वलवले भी, कर गुजरने के मगर
वस न कुछ अपना चले तो क्या करें, किससे कहें।

4

अंदाज है वेहतर, तेरी हर बात है वेहतर।
दुनिया में नहीं कोई हसीं आपसे वेहतर।

तुम आये चमन में, तो कर्ज़दार फिज़ा है
गुंचों में कहां देखी महक आज से वेहतर।

सोये हैं न जागे, तेरी पलकों के झरोखे
ये जाम भरे खुद ही छलक आये हैं, वेहतर।

चलते हो तरन्नुम से, वदन जैसे नगमगीं
पुरमस्त ये नगमा है, मगर साज, है वेहतर।

अलफाज, से नाजुक है तेरा जिक्र क्या कहें
है कोई गजल तेरे ख्यालात से वेहतर।

5

दर्दएदिल कुछ दाग़े जिगर हैं।
दोस्त यही बस, ले देकर हैं ।

किस्मत में था, हम वेघर हैं
क्यों इल्ज़ाम तुम्हारे सर हैं।

किस मुंह से अब शिकवा कीजे
बात गई बस यादें भर हैं।

अपनी जुबॉ पे जान लुटादें
जाने गये वो लोग किधर हैं।

रहने दो बातें माज़ी की
तुम वेवस हो, हम वेवस हैं।

उनकी सीधी बात पे मत जा
दिखते नहीं कुछ पेच मगर हैं।

6

बस यहीं तो था यकीनन, कब कहां मैं खो गया हूं।
गर मिलूं, दीजे खबर, मैं कुछ दिनों से गुमशुदा हूं।

फिर न महकी जिन्दगी ये, आती जाती है बहार।
दो कदम बस साथ थे तुम, आज तक मैं चल रहा हूं।

क्या हुआ, कैसे जिया मैं क्या मिलेगा जानकर
मत कुरेदो यूं मुझे तुम, जख्म हूं अब तक हरा हूं।

अक्सर गुजर जाता हूं मैं इस राह से कहते हैं लोग
आपकी चाहत में मानो, रहगुजर खुद हो गया हूं।

एक सन्नाटा सा है क्यों, हर तरफ फैला हुआ
सब खड़े चुपचाप हैं, शायद मैं दुनिया से गया हूं।

7

फिर कोई याद आ गया शायद।
हमको जीना सिखा गया शायद।

होगी तकलीफ तो, दुआ कीजे
फिर वोही दर्द है उठा शायद।

वो नहीं आजकल खफा हमसे
कोई निकला है रास्ता शायद।

फेर ली आंख आपने जबसे
है बुरा वक्त आ गया शायद।

दिल ये टूटा है आपके हाथों
लोग समझे हैं हादसा शायद।

दूर मंजिल से भटकते रहना
था ये तकदीर में लिखा शायद।

8

कोशिश चाहे लाख करें हम, कुछ तो कमी रह जाती है।
सुलझायें जो, वोही उलझन, रोज, नई वन जाती है।

जुर्रत है रखता कहने की, विरला ही इन्सान कोई
कुछ न कहें तो चुप रहने की आदत सी वन जाती है।

मिल जाय, हो जिसकी तमन्ना, विन दर्देदिल मुश्किल है
चाहत हो तो एक कसक सी दिल में कहीं रह जाती है।

युं समझे थे भूल चुके हम, उनकी वातें सव लेकिन
मीठी सी इक याद ज़हन को रह रहकर सहलाती है।

ले जाते हैं कव न जाने, उनके दर तक पांव हमें
दिल में दवी है उल्फत जो क्या क्या करतव दिखलाती है।

हो तकदीर तो क्या कहने, या तदवीरों से वात वने
कुछ न सही तो खुशफहमी भी काम कभी कर जाती है।

9

जी रहा है, जिंदगी का, वोझ लेकर आदमी।
है अजल पलपल मुकाविल, क्यों जिये फिर आदमी।

जलजले तूफां वने औ कांपती है जिंदगी
यूं हुआ है अपने घर में आज वेघर आदमी।

खूव इन्सां की तरक्की, इतने पुख्ता इंतजाम
झेल पाया पर कहां कुदरत के तेवर आदमी।

वक्त के हाथों विखरती, चूर होती जिंदगी
दूर वैठे, देखता है, हाशिये पर आदमी।

जिस तरफ डालें निगाह, है आलमे दहशत वही
हो जगह महफूज कोई जा वसे हर आदमी।

वेदरोदीवार जो हैं, गूंजती उनकी पुकार
सुन सकेगा, अपने अंदर झांकले गर आदमी।

© डॉ. जतीन्द्र वीर यख्मी 'जयवीर'

फ्लैट 11, 4B कल्पतरु एस्टेट,
जे.वी.एल.आर., अंधेरी (ईस्ट), मुम्बई-400 093
टेलीफोन: 91-9892991234

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं।
बिना लिखित अनुमति के किसी भी अंश को
फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनों,
किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं
पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा,
किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा
संचालित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Printed by:
Sanbun Publishers, 403 Imperial Tower, C-Block Naraina Vihar, New Delhi-110028

10

शायद फिर नाकाम रहे जो हमसे जुदा है साया कुछ।
ठेस लगी तब ही जीने का भेद समझ में आया कुछ।

विन मक्कारी बात बने ये नामुमकिन सा लगता है
नेक इरादों के रहते भी क्या मैं कभी कर पाया कुछ।

मैख्वारी बरबाद करेगी, इल्म तो था पर मजबूरी
कुछ हम ही तौबाशिकनी थे, यारों ने उकसाया कुछ।

अपनी समझ से कहीं परे थे, बेढंगी दुनिया के रंग,
अपनों ने कुछ राह दिखाई, गैरों ने सिखलाया कुछ।

11

है परेशां जिसे आजकल देखिये।
सभी कुछ गया है बदल देखिये।

न तब्दील होता नकल में असल
चली चाल दुनिया ने, चल देखिये।

गया वक्त भी लौटता है कभी
है जिन्दा यही एक पल देखिये।

आप ढूंढा किये जो सकूं दरबदर
है यहीं पर कहीं दरअसल देखिये।

मात दी आपने दो जहां को मगर,
अब खड़ी सामने है अजल देखिये।

है खिड़की न दरवाजा कोई यहां
कभी दिल से मेरे निकल देखिये।

अगर आप होते न यूं मेहरबां
हमें आ ही जाती गजल देखिये।

12

यकीनन चले थे, यही सोचके हम।
न दिन ये रहेंगे, यही सोचके हम।

ये हमने सुना है खुदा वांटता है
वन्दों को अपने विना मांगे नेमत
न कुछ मांगते थे, यही सोचके हम।

न वस कुछ चले तो, इवादत खुदा है
दवा से न हासिल तो आखिर दुआ है
दुआ कर रहे थे, यही सोचके हम।

गये हार हम न कहीं लोग समझें
पशेमानियों से, परेशानियों के
मुकाविल खड़े थे, यही सोचके हम।

कोई साथ देगा तो देगा कहां तक
कि परवाज, अपनी तो है आसमां तक
सो तन्हा चले थे, यही सोचके हम।

13

राह में जब पड़ाव आते हैं।
दोस्त रह रहके याद आते हैं।

ठोकरें बेहिसाब खाते हैं
दोस्त रह रहके याद आते हैं।

दूर कुछ जाके लौट आते हैं
दोस्त रह रहके याद आते हैं।

चाहके भी न भूल पाते हैं
दोस्त रह रहके याद आते हैं।

आह भरते हैं तड़प जाते हैं
दोस्त रह रहके याद आते हैं।

THIS EBOOK IS DOWNLOADED FROM
SHAAHISHAYARI.COM

LARGEST COLLECTION OF URDU
SHERS, GHAZALS, NAZMS AND EBOOKS.

14

बेवजह आप हमें काश न यूं ठुकराते।
आजमा लेते, या दस्तूर बदलते जाते।

लाख चाहा कि हो पहचान कोई अपनी भी
काश हम आपके ही नाम से जाने जाते।

ये भी अहसां न किया आपने, रूठो हमसे
इक बहाना तो मिला होता, मनाने आते।

खूब गहरी जो लगी चोट तो हमने जाना
वक्त लगता है किसी दर्द को जाते जाते।

15

आ गये मौसम सुहाने, बन संवरना सीखिये।
छोड़िये बातें पुरानी, प्यार करना सीखिये।

साफ इकरारे वफा है आपके रूख पे हुजूर
बात में दम खम लगे कुछ यूं मुकरना सीखिये।

रहगुजारे इश्क है, हमवार क्यों होगी भला
चलिये जिस रफ्तार से, मुड़जाना पर ना सीखिये।

ये अधूरा क्यों पड़ा है, वो मुकम्मिल क्यों नहीं
जिंदगी इतनी पड़ी है, सब्र करना सीखिये।

आजकल की महफिलों में, वो नफासत है कहां
दीजिये कुछ कम तवज्जो, जब्त करना सीखिये।

हल नहीं होते अचानक दिल के पेचीदा मसाईल
न सही खौफे खुदा, दुनिया से डरना सीखिये।

आंख भर आई कभी, या जहन गरमाया कभी
भर गया हो दिल, तो ठंडी आह भरना सीखिये।

16

लूटने वाले अपने ही थे, अब किस किसकी बात करें।
शक होता है आज सभी पे, अब किस किसकी बात करें।

इतना खुलापन वो अपनापन
गिर्द हमारे जाल दिया बुन
रोयें अपनी नासमझी पे, अब किस किसकी बात करें।

दर पे मिलना साथ भी चलना
हमको अकेले छोड़ें कभी ना
एक नहीं वो लोग कई थे, अब किस किसकी बात करें।

हाल है ये अब छोड़, गये सब
रह गये हम और बेगाने सब
गैर बने जो अपने कभी थे, अब किस किसकी बात करें।

17

अपना मजहब लेके चलेंगे
ऊपर सबके देश रखेंगे
जाने कब हम ये समझेंगे
जाने कब होगा ये मुमकिन

क्यों इस देश में रिश्वत का दम
हर दफ्तर सुस्ती का आलम
काम हो ज्यादा और बातें कम
जाने कब होगा ये मुमकिन

मेहनत से फसलें जो उगाते
कर्ज बने उनके हत्यारे
हों खुशहाल किसान हमारे
जाने कब होगा ये मुमकिन

शिक्षा उच्च पे सौ पावन्दी
मिल भी जाय तो भी महंगी
हक तालीम पे हो बच्चों का
जाने कब होगा ये मुमकिन

18

लो फिर दिल की दीवार ढही।
होता है हमारे साथ यही।

हर मोड़, पे हमसे मक्कारी
हर बाज़ी हमने खुद हारी
ले देके बची है खुद्दारी
जो हाल था पहले आज वही
होता है हमारे साथ यही।

चुपचाप भला क्यों जुल्म सहें
जो है बर्पा वो क्यों न कहें
इन्साफ की खातिर कुछ कर दें,
ले डूबे हमें जज्बात यही।
होता है हमारे साथ यही।

इक जैसे सभी के थे मसले
ये सोचके हम थे सब निकले
क्यों लोग न अपने साथ चले
दिल में चुभती ये बात रही।
होता है हमारे साथ यही।

कहने को यहीं थे सब अपने
इक इक करके सब दोस्त हमें,
कब छोड, गये कब चलते बने
क्या बाकी हमारी साख रही,

Dedicated to my
"Pitaji" the late Sh. Om Parkash Yakhmi
(1921-2004)

For Love and Encouragement
endless...

होता है हमारे साथ यही।
हर शाम ढले कुछ बोझल सी
यादों की ज़हन में भीड़, लगी,
सब नींद में, सोया हर कोई
आंखों में हमारी रात कटी
होता है हमारे साथ यही।

हालत सुधरेगी, हम समझे
बचने के तरीके औ नुस्खे
जो भी थे सुने, सब कर देखे
बिगड़ी तो न अपनी बात बनी।
होता है हमारे साथ यही।

आयेगी अजल ये डर हरदम
सहमे रहते लाचार से हम
ये गम है भला क्या मौत से कम
जो कल होना है आज सही।
होता है हमारे साथ यही।

19

वो हमें याद तो करते होंगे
ख्वाब ढल ढलके पिघलते होंगे

वेगुनाही को गुनाह जतलाने
वो गवाह रोज, बदलते होंगे

या रफीकों की दुआ लाई असर
या मेरे दिन ही बदलते होंगे

मुस्कुराते हो वार करते हो
मेहरबां आपसे कितने होंगे

रौशनी थी यही मुकद्दर में
अब धुंधलके ही धुंधलके होंगे

बादमुद्दत भी तेरे शहर के लोग
हां मेरे नाम से जलते होंगे

20

मैकशी है खुदकुशी, ये जानते थे हम।
होश में, क्या भूल पाते, इतने सारे गम।

किसलिये हम दोस्तों से, खुद से, गद्दारी करें
टूट जाती, है जो तौबा, क्या करेंगे हम।

शेख, साहिब मानिये इसमें असर है लाजवाब
मय से ही, अपनी दवा का, काम लेंगे हम।

जाने कब हम, खुश हुए थे, एक अर्सा हो चला
मुस्कुरायें, अब तो अक्सर, मैकदे में हम।

कुछ समझ, आने लगा है, मैकदे में आजकल
अपने बेगाने कहां, पहचानते थे हम।

मय वजह है, सब दुखों की, बात है ये खोखली
वर्ना क्यों फिर वाईजों को, होते इतने सारे गम।

21

साथ हमारा रहा मुख्तसर
रिश्ता सा वन गया था मगर
फिर मिलना न हुआ मयस्सर
नाम जुवां पे वसा आज भी
कैसे मानूं तुझे अजनवी

गजव कसम से तुम ढाती हो
पहले पहर ही आ जाती हो
हर सपने में छा जाती हो
तुमसे ख्यालों में है ताजगी
कैसे मानूं तुझे अजनवी

क्या मैं कहूं कैसा लगता है
इक अहसास नया लगता है
हर सपना सच्चा लगता है
तुमसे मिली है नई जिन्दगी
कैसे मानूं तुझे अजनवी

दुनिया में न रहा अपनापन
भीड़, में तन्हा घूम रहा मन
विखर गया जो था सूनापन
किया तुम्हें है याद जव कभी
कैसे मानूं तुझे अजनवी

झलक दिखा तुम दूर जा वसी
लगा हो मेरी, पर न हो सकी
किस्मत में थी हाय वेवसी
हर दिन जैसे वना इक सदी
कैसे मानूं तुझे अजनवी

22

किसे खबर थी, चलते चलते, आप हमें यूं मिल जायेंगे।
सोचा न था, सपने में भी, खुशियों से हम घिर जायेंगे।

जा तो रहे हो, छोड़के हमको, दिल में कहीं इक टीस उठेगी
दिल पे न लेना, वादा रहा ये, आपसे मिलने हम आयेंगे।

आज है मुश्किल, वक्त तुम्हारा, छोड़, न देना धीरज अपना
दिन मस्ती के, जव न रहे फिर, दिन ये भला कव रह पायेंगे।

हाल वतायें, क्या अपना है, वेवस हैं ये सोचके हम
याद तुम्हारी, ख्याव तुम्हारे, तन्हाई में तड़पायेंगे।

जीतके दुनिया, तुम आओगे, इस्तकवाल करेंगे लाखों
शायद तुम पहचान सको, हम भीड़, में तकते रह जायेंगे।

23

जिंदगी उलझा रही है, कुछ हमें कुछ आपको।
आजमाती जा रही है, कुछ हमें कुछ आपको।

हमकदम थे हम कभी से, मिल गये इक दूसरे से,
फिर झिझक क्यों आ रही है, कुछ हमें कुछ आपको।

दिल को दिल से रास्ता है, सच जो है वो अनकहा है
चुप ये खाये जा रही है, कुछ हमें कुछ आपको।

रोज के झगड़े ये वाहम, तुम कभी तड़पे कभी हम
इक शर्म सी आ रही है, कुछ हमें कुछ आपको।

सामने दुनिया के फर्जी दोस्त वन जायें चलो हम
इक जरूरत आ पड़ी है कुछ हमें कुछ आपको।

24

गली गली में शहर शहर में मिला न दूजा
इस दुनिया में कौन मिलेगा आपके जैसा

कैसे वतायें विना तुम्हारे दिन हैं कटे जो
खुद से वातें हम करते हैं जव से गये हो
दोस्त मिले हैं, और मिलेंगे सच पूछो तो
इस दुनिया में कौन मिलेगा आपके जैसा

शामो सुवह वस आपकी यादें तड़पाती हैं
घर दीवारें मानो खाने को आती हैं
सोचके वातें आपकी, आंखें भर आती हैं
इस दुनिया में कौन मिलेगा आपके जैसा

साथ नहीं तुम फिर भी ये लगता है अक्सर
कदम कदम पे तुम चलते हो साया वनकर
यूं तो सफर में जाने कितने लोग मिले पर
इस दुनिया में कौन मिलेगा आपके जैसा

आपसा पालें दोस्त, जमाने कई लगेंगे
आपको शायद मेरे जैसे लाख मिलेंगे
हमने हमेशा यही कहा है फिर से कहेंगे
इस दुनिया में कौन मिलेगा आपके जैसा

वेनाम थे हम नाकाम वदल दी मेरी हस्ती
इतनी वफा के हम हकदार नहीं थे फिर भी
वनके खुदा मेरी आसां हर मुशकिल करदी
इस दुनिया में कौन मिलेगा आपके जैसा

25

जुदा मुझसे होके जुल्म ढा रही हो
तुम्हीं तुम मुझे याद क्यों आ रही हो

न तुमने कहा कुछ लगा फिर मुझे क्यों
मेरी वेवसी को समझ पा रही हो

जरा नींद आई तो अक्सर लगा यूं
ख्वावों में तेरी महक आ रही हो

झिझक वो तुम्हारी हंसी वो दवी सी
जो दिल में वही तुम न कह पा रही हो

हुए तुम जो रूख्सत लगा मेरी दुनिया
मेरे सामने ही लुटी जा रही हो

कहीं रूक न जाना न मायूस होना
मेरे जाने की गर खवर आ रही हो

26

हम दिल से हैं मजवूर वहुत
तुम चले गये क्यों दूर वहुत

थी मीठे लवों में इतनी वफा
तेरी निस्वत थी एक नशा
हम भी थे नशे में चूर वहुत
तुम चले गये क्यों दूर वहुत

तुमसे रातें रंगीन रहीं
तारे जुगनू औ चांद सभी
अव लगते हैं वेनूर वहुत
तुम चले गये क्यों दूर वहुत

मांगीं थी दुआयें हाथ उठा
हमको न जुदा करना ओ खुदा
था आसमान मगरूर वहुत
तुम चले गये क्यों दूर वहुत

अवके विछड़े शायद न मिलें
मिलकर भी जुवां से कुछ न कहें
हैं जालिम ये दस्तूर वहुत
तुम चले गये क्यों दूर वहुत

JAWAHARLAL NEHRU CENTRE FOR
ADVANCED SCIENTIFIC RESEARCH
(A Deemed University)
JAKKUR CAMPUS, JAKKUR P.O.
BANGALORE - 560 064, INDIA

Professor C.N.R. RAO, F.R.S
National Research Professor
and
Honorary President

26 April, 2014

Message

I have known Dr. J.V. Yakhmi for several years, and have watched him do good quality of research work in materials chemistry/physics at BARC. I also learnt that he writes poems when he gave me his first collection of poems, a few years ago. I now see the second compilation of his poems EHSAAS. This impresses me because if while doing scientific research, which needs creativity, one can also write good poems about different aspects of life, then it brings out the human qualities in that scientist. I appreciate this, and send my best wishes on the occasion of the publication of this poetry book.

(C.N.R. Rao)

Phone : Off: 91-80-23653075, 22082761 □ Res: 91-80-23601410 □ Fax : 91-80-22082760, 22082766, 23602468
Email : cnrrao@jncasr.ac.in □ Web page : http:// www.jncasr.ac.in/cnrrao

27

करते होंगे वो याद मुझे इक वेचैनी सी रहती है।
तन्हा मुशकिल से वक्त कटे इक वेचैनी सी रहती है।

सव लोग हैं जाने पहचाने
जी फिर भी लगा है उकताने
कुछ कह न सकें वस क्या जाने
इक वेचैनी सी रहती है।

ये मर्ज वुरा है वेदर्दी
कहते हैं जिसको प्यार सभी
कुछ हलकी सी कुछ दवी दवी
इक वेचैनी सी रहती है।

वो जिसने मेरी दुनिया वदली
छू भी न सकूं मैं उसको कभी
ये वंदिश दिल ने सह तो ली
इक वेचैनी सी रहती है।

रौशन इतना मुस्तकविल हो
तुम ये कर लो ये भी कर लो
ये सव कैसे और क्योंकर हो
इक वेचैनी सी रहती है।

28

जहां भी हो आवाद रहो मैं रोज दुआ ये करता हूं
तेरी मुझे तलाश तुझे मैं भीड़ में ढूंढा करता हूं

अक्सर धोखा खाया है जव कोई तेरा हमशक्ल दिखा
रूक जाता हूं चलते चलते फिर रूक रूकके चलता हूं

क्या रिश्ता है हम दोनों में है तो सही पर कुछ आखिर
तुमसे विछड़के वर्ना क्यों मैं यूं वेचैन सा रहता हूं

तुम उजली सी एक परी सी परियों से भी दिलकश तुम
वरवस आंख से आंसू टपकें याद तुम्हें जव करता हूं

करवट लूं जव आंख खुले तो जाने कहां खो जाती हो
वोही खुशवू तेरे वदन की पर महसूस मैं करता हूं

एक तलव है या खुशफहमी शायद तुम मिल जाओ कहीं
तेरी मुझे तलाश तुझे मैं भीड, में ढूंढा करता हूं

29

हालत हमारी जानकर क्यों आंख नम हुई
बातें पुरानी यादकर, क्यों आंख नम हुई

हमने सुना था आपमें, हिम्मत है बेमिसाल
पत्थर था आपका जिगर, क्यों आंख नम हुई

रौनक थी दम से आपके, महफिल में लाजवाब
किस बात का हुआ असर, क्यों आंख नम हुई

होता रहा है यूं सितम, अक्सर हमारे साथ
क्यों दिल दुखा है आपका, क्यों आंख नम हुई

गर हो सके मेरी कमी, दिल पे न लीजिये
जाना है सबको एक दिन, क्यों आंख नम हुई

30

चल रही है जिंदगी, हम याद करते हैं तुम्हें
मिल जाय जब कोई खुशी, हम याद करते हैं तुम्हें

कहने को हम थे अजनबी
जाहिर न था हम पे कभी
थी आपकी दरियादिली
अपना लगे जब गैर भी, हम याद करते हैं तुम्हें

तुम हमसफर जब थे मेरे
आसां थे लगते रास्ते
हम दर्द से वाकिफ न थे
अब कोई मुश्किल आ पड़े, हम याद करते हैं तुम्हें

तुम क्या गये चलदी खुशी
तन्हा बसर की जिंदगी
खलती रही तेरी कमी
बरसों हुए पर आज भी, हम याद करते हैं तुम्हें

31

याद पुरानी है बरसों की
मानो बात हो कल परसों की

मैं हूं और वीरान जिन्दगी
उड़ा ले गई काली आंधी
दुनिया मेरी भरी भरी सी
मानो बात हो कल परसों की

उन आंखों में मेरी बेबसी
देखी हर पल जहां जिन्दगी
एतबार था, एक तसल्ली
मानो बात हो कल परसों की

क्यों गैरों से हमने बात की
शक ने मिटादी खुशी आपसी
इक मिसाल थी अपनी दोस्ती
मानो बात हो कल परसों की

आज बने हम आप अजनबी
यूं होगा, ये किसे खबर थी
मेरी खुशी थी खुशी आपकी
मानो बात हो कल परसों की

32

अन्दर वाहर सव विखरा है, वैठा ऊपर देख रहा है,
देखके दुनिया ये लगता है, मुझसा ही मजवूर खुदा है।

मिलके भुलादें ये सारे गम, आओ वारिश में भीगें हम
आधा सावन अभी पड़ा है, अभी हमारा क्या विगड़ा है

फिक्र हमारी क्यों करते हो, अनहोनी से क्यों डरते हो।
होश में हैं, तकलीफ जरा है, ताजा है ये जख्म हरा है।

अव ये हालत वदलेगी क्या, हमने सवकुछ है कर देखा
आसमान दुशमन अपना है, जीने में अव रखा क्या है।

मेरी गजल है नीरस वेदम, इसे सुना पाये न कभी हम
कहते रहे वस अर्ज किया है, अर्ज किया है, अर्ज किया है।

33

पूछता हूं ओ खुदा मैं, क्यों हुआ उनसे जुदा मैं।

चल दिये सब जाने वाले, दूर तक देखा किया मैं।

मेरे पैरों में हैं छाले, था किसी को ढूंढता मैं।

वो थे मैं था चांदनी थी, क्यों अचानक उठ गया मैं।

क्या संभलता दिल संभाले, जबसे बेदिल हो गया मैं।

सुनके अपनी ही कहानी, रो पड़ा बेसाख्ता मैं।

बुझ गये जुगनू दिये भी, देर तक जलता रहा मैं।

खुदको जाते दूर देखा, देखता ही रह गया मैं।

34

भूलना भी चाहते हो, याद भी करते हो तुम।
न हमें अच्छा सही, नाहक बुरा समझे हो तुम।

बेवफा हो तुम कहीं, दिल को यकीं आता नहीं ।
न कभी करते हो तुम, और हां कभी करते हो तुम।

रोजमर्रा के मसाईल, मुख्तसर सी जिन्दगी
खो न दो हमको कहीं, इस बात से डरते हो तुम।

क्यों लगा तुम हो हमारे, जब हकीकत है जुदा
क्या कहें किसके लिये, जीते हो तुम, मरते हो तुम।

हम चले बिन हमसफर, ये जिन्दगी की रहगुजर
उम्र भर तक साथ देंगे, क्यों ये दम भरते हो तुम।

35

जायका मीठे लबों का, याद आता है मुसलसल।
यादकर बेसाख्ता दिल, झूम जाता है मुसलसल।

आपकी आंखों की दस्तक, जब्त रह पाये कहां तक
झूमलें हम आसमां तक, जी में आता है मुसलसल।

हर कली गुंचा पशेमां, तुम परी हो या करिश्मा
साजेदिल तेरा ही नगमा, गुनगुनाता है मुसलसल।

सरसरी सी है बदन में, आपकी झुकती नजर ने
जो कहा, मेरे जहन में, घूम जाता है मुसलसल।

शबनमी नजरों से यारा, मुस्कुरादो गर दोबारा
वो थकन वो दर्द सारा भूल जाता है मुसलसल।

36

गौर से देखें सबको जहां में, मिलता है कुछ न मिलता है।
मिल सकता है सब कुछ लेकिन दोस्त कहां तुमसा मिलता है।

आपकी नजरों में अपनापन, मानो बुला रही हो चितवन
होंठों की हरकत से ही तो, जीने का जरिया मिलता है।

आपकी सूरत आपकी बातें, और नहीं कुछ मेरे जहन में
मेरे ख्यालों में आ आके, आपको जाने क्या मिलता है।

क्या हासिल हम क्या खोते हैं, अरमां कब पूरे होते हैं
हम खुश हैं न कोई गिला हैं, किस्मत में जो था मिलता है।

रह गई अपनी बात अधूरी, कैसे कम हो अपनी दूरी,
इक रस्ता है मेरे दिल से, आपके दिलको जा मिलता है।

सुनते हैं लोगों की जुबानी, बेजुबान की इक कुर्बानी
बरसों बाद भी आपके दरपे, दिल का मेरे टुकड़ा मिलता है।

Pankaj Udhas

6-A, HILL SIDE,
CARMICHAEL ROAD,
MUMBAI 400 026 (INDIA)
TEL.: 2351 2282 • 2351 3282
FAX : (91-22) 2352 0694
E-mail : pankajkudhas@gmail.com
velvetvoiceudhas@gmail.com

16th May 2014

Message

I have met Dr. J.V. Yakhmi twice. From his long career at BARC, I learn that he is an accomplished scientist. What I learnt, when I met him is that he also writes poems (mostly ghazals on sensitive themes), and I have gone through his first collection of poems, IZHAAR, which he had published a few years ago. I now see the second compilation of his poems -EHSAAS. A quick look at this compilation impressed me, more because one generally does not come across someone trying to make serious efforts in two diverse spheres of creativity - doing, on one hand, scientific research of high order, and also trying one's hand on writing
poetry, which demands creativity and sensitivities.

I personally appreciate the effort made by Dr. Jatinder Yakhmi, and extend my compliments and best wishes on the occasion of the publication of this poetry book EHSAAS

Shri Pankaj Udhas

37

जो चुभती हैं इस दिल में सब गुजरे वक्त की बातें हैं
क्या भूलें क्या याद करें सब गुजरे वक्त की बातें हैं

मां थी, मैं था, मेरा घर था, बरसों पहले इक छोटा सा,
इसी शहर में, इसी गली में, अब लगता है सब बदला सा
था तो यहीं इस मोड़, पे था, सब गुजरे वक्त की बातें हैं।

अब लगता है सब नया नया जाने कैसे सब खो सा गया
चलते चलते वक्त के मानो बिखर गया कुछ भी न रहा
क्या होगा, अब क्या है बचा, सब गुजरे वक्त की बातें हैं।

पौधा शहतूत का छोटा सा, बस दो पत्ते थे कल परसों
छांव भी की, सींचा हफ्तों, कहते हैं खूब फला बरसों
हो सकता है ये सच भी हों, सब गुजरे वक्त की बातें हैं।

सुनते रहते थे वो चुपचुप, कहते रहते हम कुछ न कुछ
जो झुकती पलकों ने कहा, था ख्यालात से भी नाजुक
इनका आज से क्या ताल्लुक, सब गुजरे वक्त की बातें हैं।

38

सोचता हूं क्या हूं मैं, छोटा सा लम्हा हूं मैं
और तुम मानो सदी हो, वक्त की वहती नदी हो।

सोचता हूं क्या हूं मैं, अदना सा जर्रा हूं मैं
और तुम हो इक ववंडर, दूर तक फैला समंदर।

सोचता हूं क्या हूं मैं, भीड, में तन्हा हूं मैं
और तुम वावस्तगी हो, जो नहीं थी वो कड़ी हो।

सोचता हूं क्या हूं मैं, एक स्याह धव्वा हूं मैं
और तुम उजली परी हो, शवनमी सी चांदनी हो।

सोचता हूं क्या हूं मैं, वस यूंही जिंदा हूं मैं
और तुम जिंदादिली हो, इक मुज्जसिम जिंदगी हो।

सोचता हूं क्या हूं मैं, वेसुरा नगमा हूं मैं
और तुम आसावरी हो, इक सुरीली वांसुरी हो

सोचता हूं क्या हूं मैं, अव गया मुर्झा हूं मैं
और तुम खिलती कली वो, जो फिजा महका रही हो।

सोचता रहता हूं मैं, किस कदर वदला हूं मैं
तुम मुझे जवसे मिली हो, तुम तुम्हीं वस जिंदगी हो।

39

भेजिये अव इस पते पर खत लिखा हुआ
आपके दिल में है मेरा घर वना हुआ

खुश हो तुम करीव हो महफूज, हो मगर
कुछ हो रहेगा जाने क्यों ये डर लगा हुआ

मुस्कुराते देख लूं इक वार फिर तुम्हें
है जिन्दगी में काम यही वस वचा हुआ

अहसास है तुम साथ हो हर वक्त हमारे
भूल जाते हो मुझे अक्सर तो क्या हुआ

सव दरकिनार करके जहांसे गया था मैं
देखता हूं खुद को वहीं पर खड़ा हुआ

मंजिल हुजूर हम ही यकीनन हैं तुम्हारी
गैर वनता है वने रहवर तो क्या हुआ

40

अपना दर्द छुपा लेने की, फितरत सी है।
खोकर भी कुछ पा लेने की, फितरत सी है।

किस्मत से हैं खूब खिलाड़ी, फिर वाजी क्यों हमने हारी
जानके धोखा खा लेने की, फितरत सी है।

समझेंगे कब दुनिया वाले, कुछ अपने हैं ढंग निराले
दुनिया ही ठुकरा देने की, फितरत सी है।

जश्न मना लें रातमें दिनमें, दोस्त मिले हैं खूब कि जिनमें
मौत को भी झुठला देने की, फितरत सी है।

41

किया जिक्र क्यों वात की आपने।
जगा डाली चाहत दवी आपने।

अलग अपनी दुनिया, अलग रास्ते थे
गजव क्या हिमाकत ये की आपने।

वहुत कोशिशों से वनी दो दिलों में
वो दीवार सी, तोड़, दी आपने।

थी ख्वाहिश तुम्हारी मुझे थामलो तुम
तो क्यों फिर वड़ी देर की आपने।

लिये दिल में सौ गम, जहां से चले हम
खवर क्या सुनी आज की आपने।

42

है तस्सवुर आपका ये हमपे भारी देखिये।
रात आंखों में कटी लो फिर हमारी देखिये।

आस मिलने की रहेगी आखिरी दम तक मुझे
आवाजाई आपके दर पे है जारी देखिये।

है मुकद्दस जिस जगह पे आपने छोड़े निशां
हां वहीं हमने वितादी उम्र सारी देखिये।

साथ रहते हैं कभी जो छोड़ जाते थे हमें
वन गई अपनी गमों से रिश्तेदारी देखिये।

. आपके ही नाम से लो सव वुलाते हैं हमें
दोस्ती की हमने रखी रस्म जारी देखिये।

43

और भी होंगे हमसे काविल, क्यों न जहन में आया कभी।
क्यों हम नाहक वने मसीहा, ये न समझ में आया कभी।

क्यों कोई अच्छा लगता है, है इंसां, वो खुदा लगता है
झूठ कहें सव दुनियावाले, जो वो कहे सच्चा लगता है।
क्यों कोई अच्छा लगता है, ये न समझ में आया कभी।

कैसे वन जाते हैं अपने, अपनों से भी ज्यादा अपने
कहीं से आके लोग अजनवी, वुन जाते हैं सांझे सपने
कैसे वन जाते हैं अपने, ये न समझ में आया कभी।

क्यों हम अपनों से जलते हैं, रह रहके निंदा करते हैं।
अनहोनी का डर हो जव तो, उनकी ही चिन्ता करते हैं।
क्यों हम अपनों से जलते हैं, ये न समझ में आया कभी।

कैसे वनती हैं तकदीरें, हाथ में सवके यूं तो लकीरें,
कौनसी ऐसी हैं तदवीरें, तोड़दें इन्सां की जंजीरें,
कैसे वनती हैं तकदीरें, ये न समझ में आया कभी।

क्यों उनपे ये जान लुटा दी, विनसोचे हरचीज गंवा दी
पूछते हैं वो तआरुफ मेरा, देके कजा फिर से ये सजा दी
क्यों उनपे ये जान लुटा दी, ये न समझ में आया कभी।

कैसे लोग दगा देते हैं, वक्ते जरूरत क्या देते हैं,
मदद के नाम पे रचते साजिश, आग में आग लगा देते हैं
कैसे लोग दगा देते हैं, ये न समझ में आया कभी।

क्यों हर कोई हमसे खफा है, आखिर इसकी कोई वजह है।
हमने भी क्या गुनाह किया है, दिल देकर ये दर्द लिया है।
क्यों हर कोई हमसे खफा है, ये न समझ में आया कभी।
ये न पता लग पाया कभी।

44

आपकी वातों में जाने क्यों लगी वावस्तगी।
कव न जाने वन गई वेताअल्लुकी वावस्तगी।

लौट आऊं मैं अगर, पहचान पाये वो मुझे
याद रहती है किसे कुछ देर की वावस्तगी।

छोड़कर चलदें सभी कुछ, जी में आता था मगर
रास्ता रोके खड़ी थी, फिर वोही वावस्तगी।

हमसे मिल पाते नहीं, हम याद भी आते नहीं,
और क्या होगी वजह, होगी कोई वावस्तगी।

खुद तमाशाई वने, हम वैठकर देखा किये
लुट गया सव कुछ मगर, वाकी रही वावस्तगी।

तव ये जाना, जव हुए हमसे अचानक वो जुदा,
साथ किसके कव रही, ताजिन्दगी वावस्तगी।

45

मुस्कुराहट है लवों पर, क्यों गला भर सा गया।
एक दिन होना अलग था, वक्त शायद आ गया।

आपने अपना बनाया, ये खरा है कारोबार
मुख्तसर सी जिन्दगी थी, और अपना क्या गया।

दूर से तकना हमेशा, बात करने से गुरेज़
कुछ समझ पाये नहीं हम ये अजब रिश्ता नया।

कुछ इरादा भी न था, न पहल के आदी थे हम
पर हवाएं यूं चलीं, कुछ हौसला बढ़ सा गया।

दिल से की हमने इबादत, है नतीजा सामने
देखकर तुमको लगा ज्यों सामने रब आ गया।

अनुक्रम

1.	रोज वदलें, करवटें हम	15
2.	रूख वदला है	16
3.	गाज हर दिल पे गिरे	17
4.	अंदाज है वेहतर	18
5.	दर्दएदिल	19
6.	वस यहीं तो था	20
7.	फिर कोई	21
8.	कोशिश चाहे लाख करें	22
9.	जी रहा है	23
10.	शायद फिर नाकाम रहे	24
11.	जिसे आजकल देखिये	25
12.	यही सोचके हम	26
13.	राह में जव	27
14.	वेवजह आप हमें	28
15.	आ गये मौसम सुहाने	29
16.	लूटने वाले अपने ही थे	30
17.	अपना मजहव लेके चलेंगे	31
18.	फिर दिल की दीवार ढही	32
19.	याद तो करते होंगे	34
20.	मैकशी है खुदकुशी	35
21.	साथ हमारा	36

46

सालों बाद ये प्यार मिलेगा, मानो सपना सा लगता है।
क्यों होता है एक झलक में, कोई अपना सा लगता है।

क्या है मरना क्या जीना, है एक रवायत दुनिया की
चाहने वालों पे मरना ही, जीते रहना सा लगता है।

गली गली हर शहर में ढूंढा, खाली हाथ रहे अक्सर
मीत मिला तो सारी दुनिया, हासिल करना सा लगता है।

कोई जाने, कोई समझे, लफजों की दरकार कहां
झुकी निगाहें कुछ न कहना, काफी कहना सा लगता है।

कदम कदम पर खाई ठोकर, क्यों उठकर हर बार चले
बढ़ न पाना आगे, जैसे पीछे मुड़ना सा लगता है।

जा निकलेंगे बहुत दूर हम, अबके बिछड़े किसे पता
दिल ने चाहा मिलते चलिये, वक्त ही कितना सा लगता है।

47

दिल में है जो, कह न पाना, याद रहेगा।
हां से पहले, कहना ना ना, याद रहेगा।

होश में थे पर बेहोशी थी, एक बूंद न हमने पी थी।
आपकी आंखों में झांका तो, मदहोशी ही मदहोशी थी।
न थी मीना, न पैमाना, याद रहेगा।

आते ही जाने की जल्दी, देर से आई और बस चलदी।
दिल में बसकर आपने लेकिन कसर पुरानी पूरी करदी।
इतना प्यारा ये हरजाना, याद रहेगा।

कर पायें कुछ इसका उसका, हमने कभी न अपना सोचा।
बदल ही देते मुस्तकबिल हम, काश हमारे हाथ में होता।
लीक से हटके कुछ कर जाना, याद रहेगा।

यादें हैं यादों के ऊपर, उलझ गया है मेरा तस्सवुर।
गुजर गया है एक जमाना उनको देखे उनसे मिलकर।
चाहके भी कुछ भूल न पाना, याद रहेगा।

48

एक पल हमपे आंचल के साये हुए।
इक जमाना हुआ होश आये हुए।

जिक्र आपही का, ख्याल आपके
आप ही आप हैं दिल पे छाये हुए।

आप गुजरे जहां से, महक है वहां
हर चमन में हैं गुल मात खाये हुए।

एक चुप आपकी, क्या से क्या कह गई
प्यार रहता है कब तक छुपाये हुए।

बेझिझक बोलदूं जो है दिल में मेरे,
आप बैठे हैं नजरें झुकाये हुए।

49

एक वहाना वाकी है वस।
नाज उठाना वाकी है वस।

इंतजार में हम वैठे हैं
आपका आना वाकी है वस।

आखिर आपने प्यार से देखा
दिल का लगाना वाकी है वस।

लेकर आपकी चिट्ठी कासिद
लौटके आना वाकी है वस।

क्या इस दिल की वकालत कीजे,
फटा पुराना वाकी है वस।

50

लोग मिलते हैं, वदल जाते हैं।
प्यार के वादे किधर जाते हैं।

कव गये जाया अश्क वेवस के
वक्त आने पे असर लाते हैं।

हमने देखा है वावफाओं को
आप किस किसकी कस्म खाते हैं।

आज भी गुजरें उस गली से अगर
थोड़ा रूकते हैं, ठहर जाते हैं।

हमने क्यों दर्द में हंसना सीखा
दो घड़ी दोस्त वहल जाते हैं।

51

नहीं रिश्ता कोई तुमसे, मगर फिर भी निभायेंगे।
कभी जीके, कभी मरके, मगर फिर भी निभायेंगे।

न थे हम प्यार के काबिल,
गिला करने से क्या हासिल
उठे खाली तेरे दर से, मगर फिर भी निभायेंगे।

तेरी चाहत थी इक धोखा
संभलते भी तो क्या होता
तबाह होके फना होके, मगर फिर भी निभायेंगे।

किसी काबिल कहां हम थे
नहीं कुछ बन पड़ा हमसे
रहा इक बोझ ये दिल पे, मगर फिर भी निभायेंगे।

न आये ढंग अपनों के
न गैरों से ही कुछ सीखे
कई इल्जाम हैं सर पे, मगर फिर भी निभायेंगे।

रहे उम्मीद पर जीते
मगर अपने न दिन बदले
मिला कुछ न मुकद्दर से, मगर फिर भी निभायेंगे।

52

झनझनाए तार दिल के, आपने जैसे छुआ।
हमपे इतनी मेहरवानी, ये करम कैसे हुआ।

आपसे मिलकर न जाने कव हुई शामोसुवह,
सोचिये अव तक रहे हम आपसे कैसे जुदा।

न मिले थे रूवरू ही, न कोई पहचान थी
वनते वनते दिलको दिल से रास्ता वनता गया।

आपकी वाहों के घेरे, कुछ कशिश वातों में थी
चलते चलते वन गई ये, जिन्दगी खुद इक नशा।

साफ लफ्जों में किया था, हमने इजहारे वफा।
चुप रहे क्यों चाहकर भी आपने कुछ न कहा।

THIS EBOOK IS DOWNLOADED FROM
SHAAHISHAYARI.COM

LARGEST COLLECTION OF URDU
SHERS, GHAZALS, NAZMS AND EBOOKS.

53

छोडना था, फिर मुझे क्यों, आपने अपना कहा।
न वहुत अच्छा सही, मैं था न इतना भी बुरा।

वढ़, गया था मैं यकीनन अपनी हद से कुछ परे
कुछ मेरी गुस्ताखियों को, आपने भी दी हवा।

न हमें उनसे शिकायत, न कोई रन्जिश ही थी
दरम्यां फिर, क्यों हमारे, फासला वन सा गया।

लोग समझाते हैं मुझको कुछ नहीं तेरा गया
मेरी दुनिया हिल गई इक जलजला आके गया।

आपसे मिलकर गये तो ये समझ में आ गया
सामने वेतआल्लुकी थी रावता कव का गया।

सोचलो वस जिन्दगी का एक पहलू ये भी था
अव गिरे तो क्या सम्भलते, जो हुआ अच्छा हुआ।

54

सब तो रब ने दे दिया, मांगते हम और क्या।
क्या नहीं हमको मिला, मांगते हम और क्या।

हमको देदी जिन्दगी भी ये हंसी भी चांदनी भी
और जीने की वजह, मांगते हम और क्या।

न लगे मैं था पराया, हमसफर अपना बनाया
दिल में अपने दी जगह, मांगते हम और क्या।

खुद मुझे आवाज देना, मैं चला जाऊं परे ना
छू न ले कोई बला, मांगते हम और क्या।

22. किसे खबर थी 38
23. जिंदगी उलझा रही है 39
24. गली गली में 40
25. जुदा मुझसे होके 41
26. हम दिल से हैं मजबूर 42
27. करते होंगे वो याद 43
28. जहां भी हो आबाद रहो 44
29. क्यों आंख नम हुई 45
30. चल रही है जिंदगी 46
31. याद पुरानी है वरसों की 47
32. सब विखरा है 48
33. पूछता हूं ओ खुदा 49
34. भूलना भी चाहते हो 50
35. याद आता है मुसलसल 51
36. गौर से देखें 52
37. जो चुभती हैं 53
38. सोचता हूं क्या हूं मैं 54
39. खत लिखा हुआ 55
40. फितरत सी है 56
41. क्यों वात की आपने 57
42. हमपे भारी देखिये 58
43. और भी होंगे 59
44. क्यों लगी वावस्तगी 61
45. क्यों गला भर सा गया 62
46. मानो सपना सा लगता है 63
47. याद रहेगा 64

55

क्यों होती है दिल में आहट क्या कहिये
शायद ली यादों ने करवट क्या कहिये

इल्म हमें है क्यों होता है जिक्र हमारा
अपने लवों से अपनी वावत क्या कहिये

दूर से देखा न उनके नजदीक गये हम
इसपर भी है इतनी आफत क्या कहिये

इस फिराक में दरपे तवज्जो है रखी
कव दे जाये कोई दस्तक क्या कहिये

पुरउम्मीद हैं इतने भी मायूस नहीं
मिल जाए कव उनको फुरसत क्या कहिये

देर लगी पर आखिर समझ गये हैं लोग
नफरत की है हमसे नाहक क्या कहिये

कर लेना वर्दाशत रवाना अव हूं मैं
था ये रिश्ता इतना ही वस क्या कहिये

खामोशी से मेरी परेशां क्यों हो तुम
चुप रहना है अपनी आदत, क्या कहिये

56

यूं लगता है आओगे तुम, फिर खुशियां दे जाओगे तुम।

अंसे वाद ये रूत वदली है, महकी महकी हवा चली है
छोटी सी उम्मीद जगी है, दिल कहता है आओगे तुम।

शहर में पूरे रौनक सी है, खुशियों की वारात सजी है
पूछो तो वस खवर यही है, सव कहते हैं आओगे तुम

और भी कितना तरसाओगे, वक्त लगेगा कव आओगे
क्यों पूछें हम दुनिया से ये, हमको पता है आओगे तुम

थोड़ी सी जहमत तो होगी, आजाओ चाहे पल दो ही
दर्द उठा है शायद वोही, अवभी क्या न आओगे तुम

57

बेकसी में कोई नगमा गुनगुनाना आ सके।
दर्द को तरकीब से शायद भुलाना आ सके।

भूल जाना सब, कभी न दिलपे लाना आ सके
की बहुत कोशिश हमें ये ढब निभाना आ सके।

आपके दिलमें हमें इक घर बनाना आ सके
बाद मुददत लौटके गुजरा जमाना आ सके।

जुल्म होते आप पर देखा किये हम किसलिये
आपको भी अपने दिलपे चोट खाना आ सके।

बन न जायें हम मसीहा सबकी नजरों में हुजूर
क्या गलत है क्या सही गर ये बताना आ सके।

बेअसर सी शायरी करते रहे ताउम्र हम
कुछ नहीं तो काफिया ही बस मिलाना आ सके।

उनके दर पे थी हमारी आवाजाई बासबब
नासिर्फ हो आके जाना, जाके आना आ सके।

है यकीं अबके किये हैं हमने पुखता इन्तजाम
फिर कोई मेरे तुम्हारे दरम्यां न आ सके।

58

बेवफाई करके पहली ज्यादती की आपने।
याद आये, फिर ये गलती दूसरी की आपने।

और क्या रंगीं बचा है, जिन्दगी जीने के बाद
बस पढ़ा करता हूं चिटठी, जो लिखी थी आपने।

मैकदे से मैकदे, सूखा गला लेकर गये
न कहीं बुझ पाएगी जो तिश्नगी दी आपने।

आपसे जाकर मिलेंगे था कभी से इन्तजार
खैरमकदम छोड़िये, न बात ही की आपने।

पास हूं पर दूर रहने की सजा दी आपने
फिर खड़ी दीवार करदी, इक नई सी आपने।

आप पर उंगली उठेगी बाद मेरे देखिये
बेखुदी भी आपने दी, बेकसी भी आपने।

बाद अर्जुन मैं खड़ा हूं एक बेबस जंग में,
दोस्ती भी आपने की, दुशमनी भी आपने।

नासमझ मासूम था, मैं न लगा पाया हिसाब,
छीनली खुद ही भला क्यों जो खुशी दी आपने।

भूल बैठे थे वो रातें, वो मुलाकातें तमाम
मेरी दुनिया में ये कैसी, वापिसी की आपने।

59

जिन्दगी है चार लम्हे, कुछ जिये कुछ न जिये।
एक शिद्दत चाहिये, कुछ कर गुजरने के लिये।

कौन जीता, क्या पता है, किसने वाजी मार ली
वाद मेरे, है यकीं, खाली रहेंगे हाशिये।

जानते हैं दोस्त सव, तौवा मुकम्मिल है मेरी,
जाने क्यों हलका नशा रहने लगा है विनपिये।

एक मुद्दत हम कफस में ही रहे, अव ओ खुदा
आशियाने ये अचानक, दे दिये तो क्या दिये।

क्या मिलेगा चैन जव लाखों गिरेवां चाक हैं,
कीजे क्या तारीफ हमने चंद दामन सी दिये।

की है मेहनत खूव अक्सर कुछ विना हासिल किये
देखता हूं आज मंजिल सामने कुछ विन किये।

60

वक्त जो हमने साथ गुजारा बस काफी है।
याद तुम्हें है नाम हमारा, बस काफी है।

तूफानों से नहीं शिकायत रत्ती भर भी
कश्ती को मिल जाय किनारा बस काफी है।

राहजनों के बीच, सफर में राहत सी है,
हमें मिला जो साथ तुम्हारा बस काफी है।

छोटी सी मुस्कान तो है उनके होंटों पे,
इतने में कर लेंगे गुजारा बस काफी है।

नमुमकिन था कि तुम लो पहचान हमें
बरबस मेरा नाम पुकारा बस काफी है।

अब तक तो हर मोड, पे गैरों से निबटा है,
एक दोस्त मिल जाय खुदारा बस काफी है।

61

तुमने ही बनाई ये दुनिया अब खुद से खफा कैसे हो।
कुछ तो उलटा, करदो सीधा, तुम ऐसे खुदा कैसे हो।

ढीला है सूरतेहालेजहां, ये सच्चाई है ख्वाब कहां
नाकाम रहे हो तुम इसमें फिर शक या शुबह कैसे हो।

असमंजस है, बतलाओ जो अब तक न हुआ कैसे हो
हो सकता है सब कहने को, जो बीत गया कैसे हो।

लगता ऊपर से हरा हरा, हम बन्दों से पूछो तो जरा
अच्छे हो खुदा, पर अब देखें, इन्सान भला कैसे हो।

लेके मैं शिकायत आया ज्यों तुमको ये सभी मालूम नहीं
खट्टी मीठी सब करली बयां, अब कहिये खुदा कैसे हो।

62

गैर जो न कर सके नाकामयावी कर गई।
सामने मंजिल के हम थे जिंदगी कम पड़ गई।

खूवसूरत से वनाये थे घरौंदे रेत के
क्यों उन्हें दुनिया तुम्हारी, मारके ठोकर गई।

आपने नजरें चुराली दिल ही मेरा वुझ गया
यूं लगा ज्यों मेरे अन्दर एक ख्वाहिश मर गई।

जो न कर पाये कभी इतनी मुलाकातों में तुम
कल तुम्हारी याद आकर, एक पल में कर गई।

वैठके देखा किये हम सूएमंजिल उम्र भर
एक हिम्मत एक कोशिश क्या से क्या न कर गई।

क्या वदल जाते हैं मौसम वक्त हो अपना वुरा
न इधर आई वहारें आके हर पतझड़ गई।

हर फजीहत का सवव है ये मेरी नाकर्दगी
कर गई मेरे जहन में वेकसी घर कर गई।

63

वो थे, मैं था, चांदनी थी, छोड़िये इस बात को।
महकी महकी जिन्दगी थी, छोड़िये इस बात को।

रोज हम घरसे निकलते, मोड़पे रूक रूककके चलते
हां मुहब्बत थी दबी सी, छोड़िये इस बात को।

लौटके, जा जाके देखा, दूर तक कोई नहीं था
रहगुजर खाली पड़ी थी, छोड़िये इस बात को।

फिर वोही किस्सा पुराना, हो गया दुश्मन जमाना
एक गलती हमने की थी, छोड़िये इस बात को।

सामने वो सितमगर था, हालेदिल से बेखबरसा
हमने क्या उम्मीद की थी, छोड़िये इस बात को।

कावलियत ही नहीं थी, कैसे मिलती कामयाबी
ये कमी थी, वो कमी थी, छोड़िये इस बात को।

डालते वो कैसे पर्दा, वो मेरा खूनेजिगर था
सुर्ख दामन, लव पे सुर्खी, छोड़िये इस बात को।

64

टूटते रिश्तों की खातिर इल्तिजा है आपसे।
आईये इक मर्तवा फिर इल्तिजा है आपसे।

चाहकर भी न मिले हम, खत जो आते थे गये थम,
न सही पहले सा मिलना, पूछलें वस खैर मकदम

देखिये गर हो मुनासिव, इल्तिजा है आपसे।
जाने कव खुलके हंसे थे न हुए वाकिफ खुशी से

ये सरासर ज्यादती है, गम मिले वो भी अधूरे
दो खुशी या गम मुकम्मिल, इल्तिजा है आपसे।

खोज में जिसकी रहूं मैं, क्या वही इन्सान हूं मैं
खो गया जो वरसों पहले, हां उसीकी जुस्तजू में

आप भी हो जाएं शामिल, इल्तिजा है आपसे।
क्या हुआ जो वलवला था, आपने वादा किया था

खतम करदोगे मुझे तुम, कुछ यकीं सा हो चला था
देर न हो जाय आखिर, इल्तिजा है आपसे।

गैर की फितरत समझिये, खाइयेगा कितने धोखे,
देखिये हालत हमारी, वैठे हैं वरवाद होके

48. इक जमाना हुआ 65
49. एक वहाना वाकी है वस 66
50. लोग मिलते हैं वदल जाते हैं 67
51. फिर भी निभायेंगे 68
52. ये करम कैसे हुआ 69
53. आपने अपना कहा 70
54. मांगते हम और क्या 71
55. क्या कहिये 72
56. आओगे तुम 73
57. आ सके 74
58. ज्यादती की आपने 75
59. जिन्दगी है चार लम्हे 76
60. वस काफी है 77
61. कैसे हो 78
62. गैर जो न कर सके 79
63. छोड़िये इस वात को 80
64. इल्तिजा है आपसे 81
65. जिगर में अवी 83
66. न सही रिश्ता कोई 84
67. जाने फिर क्यों 85
68. क्यों लगता है 86
69. पूछते हैं लोग 87
70. होता नहीं 88

गैर से न हों मुतासिर, इल्तिजा है आपसे।
क्यों अलग है क्यों नहीं कम, आपके गम से मेरा गम,

क्या नहीं होगा ये वेहतर, वन सकें फिर अजनवी हम
भूलके ये सव मसाईल, इल्तिजा है आपसे।

65

शोला है, एक आग है, जिगर में अभी।
गोया, कि मैं हूं आपकी, नजर में अभी।

क्यों सबके आगे रोईए, आंसू वहाइये
है एक गमगुसार, इस शहर में अभी।

हाजिर हुआ जाता हूं मैं खिदमत में आपकी
बस काम हैं दो चार, मुझे घर में अभी।

क्योंकर झुका जाता हूं मैं चलते हुए अक्सर
है मुस्तकिल सा एक खलल सर में अभी।

अब तक खुदा का खौफ था, पीते थे वाईजो
पीते हैं तुम न देखलो, इस डर में अभी।

बेवक्त, बेवजह है, खोज आपकी हुजूर
गालिब न मिलेगा किसी शायर में अभी।

66

न सही, रिश्ता कोई, पर यादें हैं कुछ आपसी
कैसे करदें, तर्के-तआल्लुक, वादे हैं कुछ आपसी।

मिलके बैठे, रूवरू हम, जैसे मुद्दत हो गई
चलिये फिरसे, करलें बातें, आपसे कुछ आपसी।

था अलग, अंदाज बेशक, आपमें कुछ बात थी
नाजनीं, सूरत भला हर, क्यों लगे कुछ आप सी।

जब यहां कोई नहीं, क्यों है यकीं, हमने सुनी
आहटें कुछ आप की सी, धड़कनें कुछ आप सी।

बाद बरसों, आप हमसे, जैसे यूं खुल कर मिले
न हुआ जाहिर किसी पे, थे गिले कुछ आपसी।

67

मीत पुराना, हमसे खफा है, जाने फिर क्यों।
आना जाना, थम सा गया है, जाने फिर क्यों।

होंठों पे, मुस्कान वही, अलफाज वही हैं
अजब मगर, सुनने में लगा है, जाने फिर क्यों।

उसमें नहीं, चितचोर अदाएं, वो पहली सी,
इक अपनेपन, का लहजा है, जाने फिर क्यों।

मौजें करती, हैं बौछारें, आ साहिल पे
पर मेरा दिल, बुझा बुझा है, जाने फिर क्यों।

वर्दाशत जिसे, चुपचाप किया न जा सकता हो
कुछ वैसा ही, दर्द उठा है, जाने फिर क्यों।

छोड़, चुके, जिस मोड, पे, उन टूटे रिशतों को
उसी जगह दिल जा ठहरा है, जाने फिर क्यों।

68

न होकर भी सामने तुम हो, क्यों लगता है।
अपना है जो, मानो गया खो, क्यों लगता है।

क्या क्या यादें, आपकी लायें, सर्द हवाएं
जाकर फिर भी पास यहीं हो, क्यों लगता है।

महक आपकी, कहे आप हो, यहीं कहीं हो
आप नहीं हो, क्यों फिर मुझको, यूं लगता है।

खूब सजा दी, जहन से मेरी, याद मिटा दी
बेकसूर हूं, हर कातिल को, क्यों लगता है।

लगें आजकल इन्तजार के पल ये बोझल
जीना है बस, पल इक पल दो, क्यों लगता है।

भीड़ में है गहरी तन्हाई, सारी दुनिया लगे पराई
खड़े सामने हर पल तुम हो, क्यों लगता है।

69

हो साथ तुम हुजूर तो ये पूछते हैं लोग।
वो है परी, या हूर, मुझे पूछते हैं लोग।

महकी हुई थी जो वही तेरी है रहगुजर,
गुजरे जो राहगीर, उसे पूछते हैं लोग।

हैरत नहीं, मिला न कोई कद्रदां मुझे
मतलब निकल गया तो किसे पूछते हैं लोग।

इक शख्स जो आशिकमिजाज था गया किधर
इतने दिनों के बाद भी ये पूछते हैं लोग।

कुछ बात है कि हम नजर आये तेरे बगैर,
हम दें जवाब कोई न दें, पूछते हैं लोग।

हम कर चुके कबूल है रिश्तों में इक दरार
इसपर भी कुछ सवाल नये पूछते हैं लोग।

बदला है वक्त अब वो जमाने कहां रहे
ए दोस्त अब तुझे न मुझे पूछते हैं लोग।

मुझ बेकसूर को मिली किस बात की सजा
इक दूसरे से आज भी ये पूछते हैं लोग।

70

आशियां अपना बिना दीवारोदर होता नहीं।
बेमुरव्वत काश ये तेरा शहर होता नहीं।

क्यों पशेमां हो कि तुमने दर्दे दिल मुझ दिया
हर गुनाह संगीन ऐसा जानकर होता नहीं।

आपका था साथ तो थी जिन्दगी, पर क्या कहें
अब सफर ऐसा है जिसमें हमसफर होता नहीं।

है गजब ढाता अजब ये कारोबारे इन्तजार,
रात गुजरे तारे गिन पर दिन बसर होता नहीं।

आये हैं सुनते कि ऐसा वक्त भी आता है जब
हो दवा या फिर दुआ कुछ कारगर होता नहीं।

दुनिया से लड़ जाईये आसान है कहना हुजूर
देखिये हर शख्स में इतना जिगर होता नहीं।

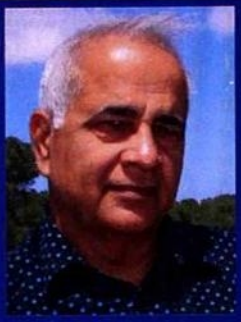

पंजाब के एक कस्बे 'खन्ना' में जन्मे जतीन्द्र वीर यख्मी ने फिजिक्स (आनर्स) स्नातक की उपाधि कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से प्राप्त की। सन 1966 से 2010 तक वह भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (B.A.R.C.) मुंबई में वैज्ञानिक के रूप में विभिन्न पदवियों पर कार्यरत रहे, जिनमें मुख्य थीं 'टेक्निकल फिजिक्स एवं प्रोटोटाईप इंजिनियरिंग' प्रभाग के अध्यक्ष (2001 - 2010), और फिजिक्स वर्ग के Associate Director (2005-2010)। उन्होंने 1975 में मुंबई विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. हासिल की।

सेवानिवृति पश्चात सन 2012 में उन्हें होमी भाभा राष्ट्रीय संस्थान मुंबई में 'राजा रामन्ना फेलो' एवं 'एटामिक एनर्जी एज्यूकेशन सोसाइटी' का 'अध्यक्ष' नियुक्त किया गया, जिन दोनों पदों पर वे आजकल अपनी भूमिका निभा रहे हैं। अपने लम्बे कार्यकाल में वैज्ञानिक शोधकार्य में उनकी अनेक उपलब्धियां रहीं जिनके लिये उन्हें 1994 में 'नेशनल अकादमी ऑफ साईंस' का फैलो निर्वाचित किया गया। यूरोप, अमेरिका, जापान व कोरिया में कई बार व्याख्यान देने का सुअवसर उन्हें प्राप्त हुआ। उर्दू गज़ल से डा यख्मी का लगाव बहुत सालों से रहा है। खुद गज़ल लिखना लगभग बीस साल पूर्व शुरू किया। उनका एक काव्यसंकलन 'इज़हार' 2004 में प्रकाशित हो चुका है। 'एहसास' उनका दूसरा प्रयास है।

Preface

Gazal, as a form of poetry in Urdu, has a unique place in literature, unparalleled in any other language, since it provides a medium to express thoughts in verses, which may or may not have the same theme running in different couplets in a single poem. Composing a *gazal* is an emotional experience. It also provides a window to the mood of the writer, at the time of writing. *Gazal* evolved about two hundred years ago, and gained immense popularity rather quickly amongst the elite, thanks to the genius of Meer, Daag, Zauq, Ghalib, and many other pioneers, who took it to great heights during the nineteenth century.

There was a danger of a decline in the appreciation of *gazal* among masses in India after it became independent, because Urdu as a medium of instruction was phased out in most northern states towards the end of fifties, and replaced by Hindi. Though, most people of my generation had a good familiarity with spoken Urdu by elders, we grew with no formal education in Urdu language in Persian script. It always remained a regret that I could not learn to write in Urdu, though I can read it with some effort. Fortunately, the first two decades after independence saw Hindi films attaining a peak of popularity, primarily due to the high lyrical content of the songs in them. Lyricists like Sahir, Mazrooh, Kaifi, and many others took this opportunity to keep Urdu poetry not only alive, but make it perhaps the only kind of poetry with mass appeal in post-independence India. Among many examples, one could mention the Hindi film *Gumrah* released in 1961, in which the lyrical quality of songs like *chalo ek baar*, penned by the incomparable Sahir Ludhianvi, proved that it was indeed possible to use Hindi films as a medium to propagate Urdu poetry among masses without compromising in quality. The richness of dialogues in chaste Urdu in many a film such as *Mughal-e-Azam* also helped in this direction. My generation